मौसम
अधिकतम तापमान 33.c
27.c न्यूनतम तापमान
बाजार
सोना 73.840g
चांदी 87.000 kg
सेंसेक्स 81,053.19

राष्ट्रीय हिन्दी दैनिक

यूपी मैसेंजर

जनता की आवाज

04 मदरसा शिक्षा में सुधार की राह खुली, कई भ्रम दूर

दीया मिर्जा का छलका दर्द

वर्ष :10 अंक :272 लखनऊ से प्रकाशित लखनऊ ,शनिवार, 09 नवम्बर 2024 पृष्ठ : 08

खरीफ फसल की कटाई के उपरांत,किसान करें फसल अवशेष प्रबंधन

यूपी मैसेंजर संवादाता

कानपुर , सीएसए के अधीन संचालित कृषि विज्ञान केंद्र दलीपनगर के मृदा वैज्ञानिक डॉ खलील खान ने कृषकों हेतु ₹खरीफ फसल की कटाई उपरांत,किसान भाई करें फसल अवशेष प्रबंधन₹ विषय नामक एडवाइजरी जारी की है।उन्होंने किसानों को बताया कि फसल अवशेष जलाने से भूमि में उपलब्ध जैव विविधता समाप्त हो जाती है।इससे मिट्टी में होने वाली रासायनिक क्रियाएं भी प्रभावित होती हैं।जैसे कार्बन- नाइट्रोजन एवं कार्बन फास्फोरस का अनुपात बिगड़ जाता है।जिससे पौधों को पोषक तत्व ग्रहण करने में कठिनाई होती है। डॉक्टर खान ने बताया कि भूमि की संरचना में छती होने से पोषक तत्वों की समुचित मात्रा पौधों को उपलब्ध नहीं होने से जल निकासी संभव नहीं हो पाती है।उन्होंने कहा कि मिट्टी में उपलब्ध कार्बनिक पदार्थ का नुकसान होता है।और मित्र कीट केंचुआ नष्ट हो जाते हैं। तथा फसल अवशेषों को आग लगाने से जनधन की हानि भी होती है और पेड़ पौधे जलकर नष्ट हो जाते हैं। उन्होंने किसानों को सलाह दी है कि फसल अवशेषों के मृदा में मिलाने से मिट्टी में जैव विविधता बनी रहती है।मृदा में उपस्थित मित्र कीट शत्रु कीटों को खाकर नष्ट कर देते हैं।तथा मृदा में जीवांश कार्बन की मात्रा बढ़ती है और फसल उत्पादन अधिक होता है। उन्होंने कहा कि किसानों द्वारा फसल अवशेष जलाने के बजाय भूसा बनाकर रखने पर जहां एक ओर उनके पशुओं के लिए चारा उपलब्ध होगा।वहीं अतिरिक्त फसल अवशेष को बेचकर आमदनी बढ़ा सकते हैं।

राष्ट्रीय
सहारा
कानपुर • शनिवार • 9 नवम्बर • 2024

ल अवशेष जलाने से खेत मिट्टी को होता है नुकसान'

ुर (एसएनबी)। चंद्रशेखर आजाद एवं प्रौद्योगिकी विश्वविद्यालय कानपुर धीन संचालित कृषि विज्ञान केंद्र नगर के मृदा वैज्ञानिक डॉ. खलील ने कृषकों के लिए 'खरीफ फसल की के उपरांत किसान भाई करें फसल ष प्रवंधन' विषय पर एडवाइजरी जारी । उन्होंने किसानों को वताया कि फसल ष जलाने से भूमि में उपलब्ध जैव ता समाप्त हो जाती है।

डॉ. खान ने कहा कि फसल अवशेष से मिट्टी में होने वाली रासायनिक ं भी प्रभावित होती हैं। जैसे कार्वन-जन एवं कार्वनफास्फोरस का अनुपात जाता है जिससे पौधों को पोषक तत्व करने में कठिनाई होती है। भूमि की ा में क्षति होने से पोषक तत्वों की त मात्रा पौधों को उपलब्ध नहीं होने से नेकासी संभव नहीं हो पाती है। उन्होंने के मिट्टी में उपलब्ध कार्वनिक पदार्थ क्सान होता है और मित्र कीट केंचुआ ो जाते हैं। फसल अवशेषों को आग से जनधन की हानि भी होती है और पेड़ लकर नष्ट हो जाते हैं। उन्होंने किसानों लाह दी है कि फसल अवशेषों के मृदा ाने से मिट्टी में जैव विविधता वनी रहती न्होंने कहा कि किसानों द्वारा फसल ष जलाने के वजाय भूसा वना रखने पर क ओर उनके पशुओं के लिए चारा श्च होगा वहीं अतिरिक्त फसल अवशेष व आमदनी वढ़ा सकते हैं।

कानपुर व लखनऊ से एक साथ प्रकाशित वर्ष: 16 अंक : 128 कानपुर, शनिवार 09 नवम्बर 2024 नगर संस्करण पृष्ठ 12 मूल्य : 2.00 रुपए

राष्ट्रीय स्वरूप

खरीफ फसल की कटाई के उपरांत किसान करें फसल अवशेष प्रबंधन

कानपुर । सीएसए के अधीन संचालित कृषि विज्ञान केंद्र दलीपनगर के मृदा वैज्ञानिक डॉ खलील खान ने कृषकों हेतु 卐खरीफ फसल की कटाई उपरांत,किसान भाई करें फसल अवशेष प्रबंधन卐 विषय नामक एडवाइजरी जारी की है। उन्होंने किसानों को बताया कि फसल अवशेष जलाने से भूमि में उपलब्ध जैव विविधता समाप्त हो जाती है। इससे मिट्टी में होने वाली रासायनिक क्रियाएं भी प्रभावित होती हैं। जैसे कार्बन- नाइट्रोजन एवं कार्बन फास्फोरस का अनुपात बिगड़ जाता है।जिससे पौधों को पोषक तत्व ग्रहण करने में कठिनाई होती है। डॉक्टर खान ने बताया कि भूमि की संरचना में छती होने से पोषक तत्वों की समुचित मात्रा पौधों को उपलब्ध नहीं होने से जल निकासी संभव नहीं हो पाती है।उन्होंने कहा कि मिट्टी में उपलब्ध कार्बनिक पदार्थ का नुकसान होता है।और मित्र कीट केंचुआ नष्ट हो जाते हैं। तथा फसल अवशेषों को आग लगाने से जनधन की हानि भी होती है और पेड़ पौधे जलकर नष्ट हो जाते हैं। उन्होंने किसानों को सलाह दी है कि फसल अवशेषों के मृदा में मिलाने से मिट्टी में जैव विविधता बनी रहती है। मृदा में उपस्थित मित्र कीट शत्रु कीटों को खाकर नष्ट कर देते हैं। तथा मृदा में जीवांश कार्बन की मात्रा बढ़ती है और फसल उत्पादन अधिक होता है। उन्होंने कहा कि किसानों द्वारा फसल अवशेष जलाने के बजाय भूसा बनाकर रखने पर जहां एक ओर उनके पशुओं के लिए चारा उपलब्ध होगा।वहीं अतिरिक्त फसल अवशेष को बेचकर आमदनी बढ़ा सकते हैं।

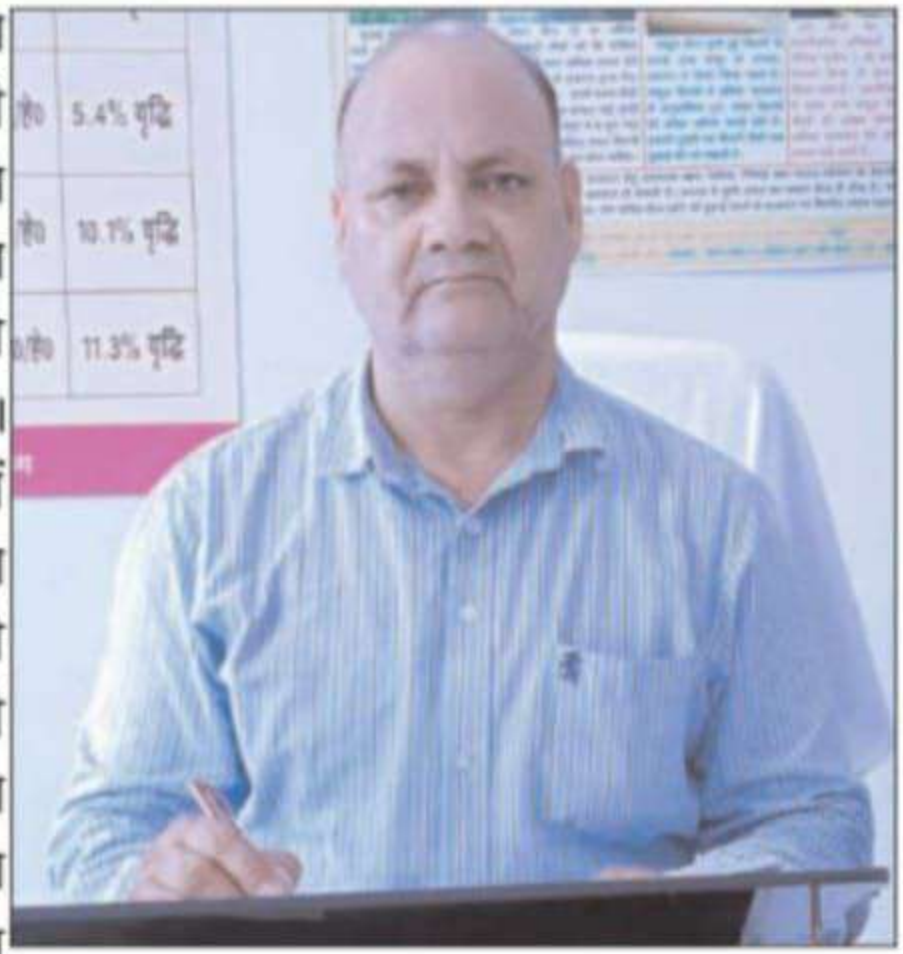

फसल अवशेषों के मृदा में मिलाने पर बनी रहती है मिट्टी में जैव विविधता

कानपुर, 7 नवम्बर। चंद्रशेखर आजाद कृषि एवं प्रौद्योगिकी विश्वविद्यालय के अधीन संचालित कृषि विज्ञान केंद्र दलीपनगर के मृदा वैज्ञानिक डॉ खलील खान ने कृषकों हेतु खरीफ फसल की कटाई उपरांत,किसान भाई करें फसल अवशेष प्रबंधन विषय नामक एडवाइजरी जारी की है। उन्होंने किसानों को बताया कि फसल अवशेष जलाने से भूमि में उपलब्ध जैव विविधता समाप्त हो जाती है। इससे मिट्टी में होने वाली रासायनिक क्रियाएं भी प्रभावित होती हैं। जैसे कार्बन- नाइट्रोजन एवं कार्बन फास्फोरस का अनुपात बिगड़ जाता है। जिससे पौधों को पोषक तत्व ग्रहण करने में कठिनाई होती है। डॉक्टर खान ने बताया कि भूमि की संरचना में छती होने से पोषक तत्वों की समुचित मात्रा पौधों को उपलब्ध नहीं होने से जल निकासी संभव नहीं हो पाती है। उन्होंने कहा कि मिट्टी में उपलब्ध कार्बनिक पदार्थ का नुकसान होता है और मित्र कीट केंचुआ नष्ट हो जाते हैं। तथा फसल अवशेषों को आग लगाने से जनधन की हानि भी होती है और पेड़ पौधे जलकर नष्ट हो जाते हैं। उन्होंने किसानों को सलाह दी है कि फसल अवशेषों के मृदा में मिलाने से मिट्टी में जैव विविधता बनी रहती है। मृदा में उपस्थित मित्र कीट शत्रु कीटों को खाकर नष्ट कर देते हैं। तथा मृदा में जीवांश कार्बन की मात्रा बढ़ती है और फसल उत्पादन अधिक होता है। उन्होंने कहा कि किसानों द्वारा फसल अवशेष जलाने के बजाय भूसा बनाकर रखने पर जहां एक ओर उनके पशुओं के लिए चारा उपलब्ध होगा।वहीं अतिरिक्त फसल अवशेष को बेचकर आमदनी बढ़ा सकते हैं।

खरीफ फसल की कटाई के उपरांत किसान करें फसल अवशेष प्रबंधन

वर्ष : 16 अंक : 302 लखनऊ शनिवार, 9 नवंबर 2024 पृष्ठ : 12, मूल्य: ₹4/-

मौसम

www.vishwavarta.com

विश्ववार्ता

नगर संस

नित

र्य समय पर
हती है। सिंह
सन मे रहोगे
सित रहेंगे।
जला अध्यक्ष
शिक्षकों की
राने के लिये
इससे पहले
के ब्लाक
विधायक,
आनंद गुप्ता
चिन्ह देकर

हरिशंकर,
लता, पुष्पा
वृत शिक्षकों
सिंह देकर
सम्मानित
वर्मा, शिवम
, रामबाबू,
लता, अनंत
मौजूद रहे।

फसलों के अवशेष जलाने से नष्ट हो जाते हैं किसान मित्र कीट

कानपुर। फसल अवशेष जलाने से भूमि में उपलब्ध जैव विविधता समाप्त होने के साथ ही किसान मित्र कीट केंचुआ नष्ट हो जाते है। यह जानकारी शुक्रवार को चंद्रशेखर आजाद कृषि एवं प्रौद्योगिकी विश्वविद्यालय कानपुर के अधीन संचालित कृषि विज्ञान केंद्र दलीप नगर के मृदा वैज्ञानिक डॉ. खलील खान ने दी। उन्होंने बताया कि खरीफ फसल की कटाई के उपरांत जो किसान भाई फसल अवशेष जला देतें है, इससे भूमि में उपलब्ध जैव विविधता समाप्त हो जाती है और इसके साथ ही मिट्टी में होने वाली रासायनिक क्रियाए भी प्रभावित होती है। उदाहरण देते हुए उन्होंने बताया कि कार्बन- नाइट्रोजन एवं कार्बन—फास्फोरस का अनुपात बिगड़ जाता है। जिससे पौधों के पोषक तत्व ग्रहण करने में कठिनाई होती है। भूमि की संरचना में क्षति होने से पोषक तत्वों की समुचित मात्रा पौधों को उपलब्ध नहीं होने से जल निकासी संभव नहीं हो पाती है।

कृष

विश्ववात

बांगरमऊ
मार्ग स्थित
आयोजित 7
वृंदावन धा
जी द्वारा मी
गया। पूर्व च
पर दीप
शुभारंभ वि
रसपान हेतु
उमड़ी।

कृष्ण भ
द्वारा आयो
अंजनी मां
गोपाल की
भगवान कृष
जन्म याद
की जिद क
देने से इंक
प्रतिज्ञा की

कानपुर

फसलों के अवशेष जलाने से नष्ट हो जाते हैं किसान मित्र कीट।

आज़ाद समाचार NOVEMBER 9, 2024 1 MIN READ

आ स. संवाददाता

कानपुर। फसल अवशेष जलाने से भूमि में उपलब्ध जैव विविधता समाप्त होने के साथ ही किसान मित्र कीट केंचुआ नष्ट हो जाते है। यह जानकारी शुक्रवार को चंद्रशेखर आजाद कृषि एवं प्रौद्योगिकी विश्वविद्यालय कानपुर के अधीन संचालित कृषि विज्ञान केंद्र दलीप नगर के मृदा वैज्ञानिक डॉ. खलील खान ने दी।

उन्होंने बताया कि खरीफ फसल की कटाई के उपरांत जो किसान भाई फसल अवशेष जला देतें है, इससे भूमि में उपलब्ध जैव विविधता समाप्त हो जाती है और इसके साथ ही मिट्टी में होने वाली रासायनिक क्रियाए भी प्रभावित होती है। उदाहरण देते हुए उन्होंने बताया कि कार्बन- नाइट्रोजन एवं कार्बन– फास्फोरस का अनुपात बिगड़ जाता है। जिससे पौधों के पोषक तत्व ग्रहण करने में कठिनाई होती है। भूमि की संरचना में क्षति होने से पोषक तत्वों की समुचित मात्रा पौधों को उपलब्ध नहीं होने से जल निकासी संभव नहीं हो पाती है। उन्होंने कहा कि मिट्टी में उपलब्ध कार्बनिक पदार्थ का नुकसान होता है। और मित्र कीट केंचुआ नष्ट हो जाते हैं। तथा फसल अवशेषों को आग लगाने से जनधन की हानि भी होती है और पेड़ पौधे जलकर नष्ट हो जाते हैं। उन्होंने किसान भाई से अपील करते हुए कहा कि फसल अवशेषों के मृदा में मिलाने से मिट्टी में जैव विविधता बनी रहती है। मृदा में उपस्थित मित्र कीट शत्रु कीटों को खाकर नष्ट कर देते हैं। तथा मृदा में जीवांश कार्बन की मात्रा बढ़ती है और फसल उत्पादन अधिक होता है। उन्होंने कहा कि किसानों द्वारा फसल अवशेष जलाने के बजाय भूसा बनाकर रखने पर जहां एक ओर उनके पशुओं के लिए चारा उपलब्ध होगा। वहीं अतिरिक्त फसल अवशेष को बेचकर किसान आय बढ़ा सकते हैं।

दैनिक
उद्योग नगरी टाइम्स
E-mail : dainikudyognagritimes@gmail.com
सत्य ही कर्तव्य

294 कानपुर, शनिवार 9 नवम्बर 2024 RNI UPHIN/2010/47220 पृष्ठ : 4

खरीफ फसल की कटाई के उपरांत, किसान करें फसल अवशेष प्रबंधन

अनवर अशरफ

कानपुर यू एन टी । चंद्रशेखर आजाद कृषि एवं प्रौद्योगिकी विश्वविद्यालय कानपुर के अधीन संचालित कृषि विज्ञान केंद्र दलीपनगर के मृदा वैज्ञानिक डॉ खलील खान ने कृषकों हेतु खरीफ फसल की कटाई उपरांत,किसान भाई करें फसल अवशेष प्रबंधन विषय नामक एडवाइजरी जारी की है। उन्होंने किसानों को बताया कि फसल अवशेष जलाने से भूमि में उपलब्ध जैव विविधता समाप्त हो जाती है। इससे मिट्टी में होने वाली रासायनिक क्रियाएं भी प्रभावित होती हैं। जैसे कार्बन- नाइट्रोजन एवं कार्बनट्टफास्फोरस का अनुपात बिगड़ जाता है ।जिससे पौधों को पोषक तत्व ग्रहण करने में कठिनाई होती है। डॉक्टर खान ने बताया कि भूमि की संरचना में छती होने से पोषक तत्वों की समुचित मात्रा पौधों को उपलब्ध नहीं होने से जल निकासी संभव नहीं हो पाती है ।उन्होंने कहा कि मिट्टी में उपलब्ध कार्बनिक पदार्थ का नुकसान होता है ।और मित्र कीट केंचुआ नष्ट हो जाते हैं। तथा फसल अवशेषों को आग लगाने से जनधन की हानि भी होती है और पेड़ पौधे जलकर नष्ट हो जाते हैं। उन्होंने किसानों को सलाह दी है कि फसल अवशेषों के मृदा में मिलाने से मिट्टी में जैव विविधता बनी रहती है। मृदा में उपस्थित मित्र कीट शत्रु कीटों को खाकर नष्ट कर देते हैं। तथा मृदा में जीवांश कार्बन की मात्रा बढ़ती है और फसल उत्पादन अधिक होता है। उन्होंने कहा कि किसानों द्वारा फसल अवशेष जलाने के बजाय भूसा बनाकर रखने पर जहां एक ओर उनके पशुओं के लिए चारा उपलब्ध होगा ।वहीं अतिरिक्त फसल अवशेष को बेचकर आमदनी बढ़ा सकते हैं।

अमृत विचार
www.amritvichar.com

ऊसर को उपजाऊ बनाकर कमा रहे मुनाफा

गीतेश अग्निहोत्री, शिवली

अमृत विचार। पूर्वांचल से पांच दशक पूर्व मैथा तहसील के गारब व बैरी सवाई पंचायत में आए ग्रामीण यहां बस कर ऊसर खेती को उपजाऊ बनाकर अपने परिवार का पालन पोषण कर रहे हैं। पूर्वांचल के लोगों के दो गांव रविंद्रपुरम व इंदिरा नगर बसे हैं। छठ के समय इन गांवों में पर्व की धूम मचती है।

करीब पांच दशक पहले मैथा तहसील की ग्राम सभा के ऊसर भूमि वाले जगह पर गोरखपुर से आए पूर्वांचल के लोगों ने अपना आशियाना बनाया। धीरे-धीरे गांव बस गया। गांव का नाम रविंद्रपुरम पड़ा। इसी तरह ग्राम सभा बैरी सवाई के ऊसर में बसे पीलीभीत व आसपास के लोगों के गांव का नाम इंदिरानगर पड़ा। इन दोनों गांवों में पूर्वांचल से आए लोगों का बोलबाला है। मेहनत कर ऊसर जमीन को पैदावार लायक बना दिया। जिससे धान, गेहूं, गन्ना आदि फसलें होती हैं।

रविंद्रपुरम गांव में धान की फसल काटता किसान। अमृत विचार

> समय-समय पर रविंद्रपुरम व इंदिरानगर के किसानों को केवीके जानकारी उपलब्ध कराता रहता है। किसानों ने ऊसर को उत्तम खेती बनाकर मिसाल पैदा की है।
>
> -खलील खान, मृदा वैज्ञानिक, कृषि विज्ञान केंद्र दलीपनगर

छठ मैया के आशीर्वाद से हम लोग यहां आकर खुशहाल हैं। भूमि को पैदावार लायक बनाकर भरण-पोषण करते हैं।

-संतोष कुमार इलेक्ट्रिशियन

रविंद्रपुरम गांव में हमारे परिवार के लोग आए थे। मेहनत करके हम लोगों ने यहां सब कुछ बना लिया।

-अर्जुन सिंह किसान

मेहनत और छठ मैया के आशीर्वाद से हम लोग यहां आबाद हुए हैं। आसपास के लोगों का भी सहयोग मिलता है।

-अखिलेश किसान

ऊसर जमीन को हम लोगों ने मेहनत से उपजाऊ बनाई है। जिसमें आज सभी तरह की फसलें होती है।

-विद्याचंद किसान

Read Only - Save a copy to edit.

04 प्रदेश, 06 संस्करण

अमर भारती

एक उम्मीद

अंक: 305, पृष्ठ: 12, मूल्य: 03 रु. RNI No. UPHIN/2011/46455 www.amarbharti.com

शनिवार, 09 नवम्बर 2024 शक संवत् 1946, कार्तिक शुक्ल

...किया ...भ

...ने से इंकार
...ज्ञा की कि
...त होने तक
...करेंगी। मीरा
...पाल प्रसन्न
...में संत को
...री भक्त है।
...: संत नगर
...मूर्ति मीरा
...कर प्रसन्न
...न हो जाती
...च गई और
...कर कृष्ण
...ला के अंत
...धीर कुमार
...श द्विवेदी व
...आरती कर

खरीफ फसल की कटाई के उपरांत, किसान करें फसल अवशेष प्रबंधन

कानपुर (अमर भारती)। सीएसए के अधीन संचालित कृषि विज्ञान केंद्र दलीपनगर के मृदा वैज्ञानिक डॉ खलील खान ने कृषकों हेतु खरीफ फसल की कटाई उपरांत, किसान भाई करें फसल अवशेष प्रबंधन विषय नामक एडवाइजरी जारी की है। उन्होंने किसानों को बताया कि फसल अवशेष जलाने से भूमि में उपलब्ध जैव विविधता समाप्त हो जाती है। इससे मिट्टी में होने वाली रासायनिक क्रियाएं भी प्रभावित होती हैं। जैसे कार्बन-नाइट्रोजन एवं कार्बन फास्फोरस का अनुपात बिगड़ जाता है।जिससे पौधों को पोषक तत्व ग्रहण करने में कठिनाई होती है। डॉक्टर खान ने बताया कि भूमि की संरचना में छती होने से पोषक तत्वों की समुचित मात्रा पौधों को उपलब्ध नहीं होने से जल निकासी संभव नहीं हो पाती है।उन्होंने कहा कि मिट्टी में उपलब्ध कार्बनिक पदार्थ का नुकसान होता है।और मित्र कीट केंचुआ नष्ट हो जाते हैं। तथा फसल अवशेषों को आग लगाने से जनधन की हानि भी होती है और पेड़ पौधे जलकर नष्ट हो जाते हैं।

विश... संगोष्ठी...

अमर भ...

उन्नाव। उत्त...
टेक्नीशियन ...
जिला अध्यक्ष ...
8 नवंबर विश्व ...
की संगोष्ठी ज...
उन्नाव के स...
अतिथि मुख्य ...
डॉ रियाज अल...
अधीक्षक डॉक...
रेडियोलोजी ...
रेडियोलॉजिस्ट ...
की अध्यक्षता ...
दिवस की सं...
नवंबर 1895...
खोज करने वा...
डॉक्टर विलि...
की प्रतिमा पर ...
रेडियोग्राफी वि...
रेडियोलॉजिस्ट ...
गुप्ता ने विस्तार ...
खोज एवं ...
संबंधित होने व...
में अवगत करा...
अधीक्षक डा. ...
ने भी एक्स-...

Read Only - Save a copy to edit.

उत्तराखंड,मध्य-प्रदेश,उत्तर-प्रदेश,राजस्थान,बिहार,महाराष्ट्र,गुजरात,संघ प्रदेश,से एक साथ प्रसारित

हिन्दी दैनिक RNI NO - UTTHIN/2018/76731

गांव देहात की खबर,शहर पर भी नजर

दि ग्राम टुडे

मौसम
अधि. 15 | सूर्योदय: 7:31
न्यून. 06 | सूर्यास्त: 5:27

शनिवार, 09 नवंबर 2024

वर्ष: 06 अंक: 323 | पेज: 08, मूल्य: 2 रुपये

Email : thegramtodayeditor@gmail.com

खरीफ फसल की कटाई के उपरांत किसान करें फसल अवशेष प्रबंधन

दि ग्राम टुडे, कानपुर।
(संजय मौर्य)

चंद्रशेखर आजाद कृषि एवं प्रौद्योगिकी विश्वविद्यालय कानपुर के अधीन संचालित कृषि विज्ञान केंद्र दलीपनगर के मृदा वैज्ञानिक डॉ खलील खान ने कृषकों हेतु "खरीफ फसल की कटाई उपरांत,किसान भाई करें फसल अवशेष प्रबंधन" विषय नामक एडवाइजरी जारी की है। उन्होंने किसानों को बताया कि फसल अवशेष जलाने से भूमि में उपलब्ध जैव विविधता समाप्त हो जाती है। इससे मिट्टी में होने वाली रासायनिक क्रियाएं भी प्रभावित होती हैं। जैसे कार्बन- नाइट्रोजन एवं कार्बनफास्फोरस का अनुपात बिगड़ जाता है।जिससे पौधों को पोषक तत्व ग्रहण करने में कठिनाई होती है। डॉक्टर खान ने बताया कि भूमि की संरचना में छती होने से पोषक तत्वों की समुचित मात्रा पौधों को उपलब्ध नहीं होने से जल निकासी संभव नहीं हो पाती है।उन्होंने कहा कि मिट्टी में उपलब्ध कार्बनिक पदार्थ का नुकसान होता है।और मित्र कीट केंचुआ नष्ट हो जाते हैं। तथा फसल अवशेषों को आग लगाने से जनधन की हानि भी होती है और पेड़ पौधे जलकर नष्ट हो जाते हैं। उन्होंने किसानों को सलाह दी है कि फसल अवशेषों के मृदा में मिलाने से मिट्टी में जैव विविधता बनी रहती है। मृदा में उपस्थित मित्र कीट शत्रु कीटों को खाकर नष्ट कर देते हैं। तथा मृदा में जीवांश कार्बन की मात्रा बढ़ती है और फसल उत्पादन अधिक होता है। उन्होंने कहा कि किसानों द्वारा फसल अवशेष जलाने के बजाय भूसा बनाकर रखने पर जहां एक ओर उनके पशुओं के लिए चारा उपलब्ध होगा।वहीं अतिरिक्त फसल अवशेष को बेचकर आमदनी बढ़ा सकते हैं।